Theme: Pedagogical Leadership for Enhancing Student Learning Competencies

Dr Seema Sharma
Principal
Dr Sampurnanand Sarvodaya Kanya Vidyalaya
No 1, Yamuna Vihar, New Delhi
Email id: 1104018@deo.delhi.gov.in
Mobile no.: 9414664124

केस अध्ययन

परिचय :-डॉक्टर संपूर्णानंद सर्वोदय कन्या विद्यालय सी ब्लॉक नंबर 1 यमुना विहार दिल्ली-53 । ज़िला उत्तर पूर्व-I का यह विद्यालय जहां कुल 4609 छात्राएं शिक्षा ग्रहण करती हैं जिनमें 2361 अल्पसंख्यक छात्राएं, 325 अनुसूचित जाति की छात्राएं ,4 अनुसूचित जनजाति की छात्राएं, 331 ओबीसी छात्राएं तथा 3939 जनरल छात्राएं शिक्षा ग्रहण करती हैं । विद्यालय में कुल 172 अध्यापक इन छात्राओं को शिक्षा प्रदान करते हैं।

शैक्षिक प्रबंधन में केस अध्ययन का उद्देश्य:- विद्यालय में अनेक प्रकार की समस्याएं होती हैं। उन समस्याओं का पता लगाकर उन्हें दूर करने के लिए समाधान निकालना ही केस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है। केस अध्ययन से छात्राओं तथा अध्यापकों को लाभ प्राप्त होता है, जिससे उनके लिए बेहतर कार्य किया जा सकता है ।

समस्या की प्रकृति:- छात्राओं की नियमितता तथा समय बाध्यता में कमी

समस्या के कारण:- विद्यालय में आने वाली अधिकतर छात्राएं समाज के निम्न वर्ग से आती हैं, जिनके माता-पिता की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। अधिकतर माता-पिता मजदूरी करते हैं या उनका कोई छोटा निजी व्यवसाय है । रोज नियमित रूप से समय पर विद्यालय आना जीवन में क्यों महत्वपूर्ण है, इस समझ का माता-पिता तथा बच्चों में अभाव होना ।

समस्या का प्रथम अनुभव:- विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉक्टर सीमा शर्मा ने लगभग 1 वर्ष पूर्व जब इस विद्यालय में ज्वाइन किया तब उन्होंने देखा की बहुत अधिक संख्या में छात्राएं विद्यालय देर से आती थी । छात्राएं विद्यालय में नियमित रूप से भी नहीं आती थी । विद्यालय के स्टाफ को भी कुछ हद तक समय पर आने के लिए समझाना अनिवार्य था। इस समस्या को विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉक्टर सीमा शर्मा ने अनुभव किया ।

केस अध्ययन की समस्या के समाधान के लिए किया गया प्रयास:- विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉक्टर सीमा शर्मा तथा सभी अध्यापकों ने मिलकर बच्चों की तथा उनके माता-पिता की काउंसलिंग की, उनसे बातचीत करके उन्हें समझाया कि जीवन में अनुशासन तथा समयनिष्ठा का क्या महत्व है। इसके लिए विद्यालय में हाउस व्यवस्था भी कार्य करती है तथा इसमें स्कूल प्रबंधन समिति का भी सहयोग लिया गया । विद्यालय में एक और पहल **"प्रिंसिपल ऑफ द डे"** शुरू किया गया जिसमें एक अध्यापक एक दिन प्रिंसिपल का कार्यभार संभालता है । इससे प्रधानाचार्या तथा अध्यापकों के बीच संबंध बेहतर बनने में सहायता मिली तथा प्रधानाचार्या की विद्यालय को तथा छात्रों को लेकर क्या समझ है इसको सभी अध्यापकों को समझने में भी आसानी हुई तथा स्कूल का माहौल बेहतर बन सका ।

विद्यालय की एक और पहल **"गमलादान महादान"** जिसमें विद्यालय की सभी छात्राओं को प्रेरित किया जाता है कि वह अपने जन्म दिवस पर विद्यालय में एक पौधा दान करें। उस पौधे को अपने हाथों से विद्यालय में रोपित करें तथा फिर उसकी देखभाल भी करें । छात्राओं को अपने जन्म दिवस पर टॉफी या चॉकलेट बांटने की जगह एक गमला दान करने के लिए प्रेरित किया जाता है । इससे विद्यालय में टॉफी, चॉकलेट के रैपर इधर-उधर नहीं बिखरते तथा बच्चों के अंदर पर्यावरण के प्रति जागरूकता भी आई ।

विद्यालय में एक और पहल **"पियर ऑब्जरवेशन"** है जिसमें एक ही विषय के दो अध्यापक एक दूसरे की कक्षाओं का बारी-बारी से निरीक्षण करते हैं । उसके बाद आपस में बैठकर चर्चा करते हैं कि कक्षा में क्या अच्छा था और किस बिंदु पर अध्यापक को बेहतर करने का प्रयास करने की आवश्यकता है । इससे अध्यापकों की अध्यापन शैली में बहुत परिवर्तन हुए तथा वह अपने विषय को और बेहतर तरीके से बच्चों को पढ़ाने लगे । इससे बच्चों में भी विषय के प्रति रुचि बढ़ने लगी ।

विद्यालय की एक और पहल प्लास्टिक मुक्त विद्यालय:- इसके अंतर्गत बच्चों को यह समझाया गया कि वह प्लास्टिक के टिफिन में भोजन करने की जगह स्टील के टिफिन में भोजन करें। बच्चों को जंक फूड के पैकेट लाने के लिए मना किया गया क्योंकि वह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है और उसके रैपर विद्यालय में इधर-उधर बिखरते हैं ।

विद्यालय की एक और पहल **"K.Y.O.(Know Your Organisation)"** शुरू की गई जिसमें विद्यालय के स्टाफ के सभी अध्यापक, सिक्योरिटी गार्ड, मिनिस्ट्रियल स्टाफ तथा सफाई कर्मचारी सभी एक साथ बैठकर बातचीत करते हैं। विद्यालय मैं कौन सी समस्याएं हैं तथा उनका क्या समाधान निकाला जा सकता है इस पर चर्चा करते हैं। इससे विद्यालय में एक अच्छा माहौल बनता है जिससे और बेहतर कार्य किया जा सकता है ।

परिणाम:-

पहले की तथा बाद की स्थिति :-

विद्यालय टीम के सभी सदस्यों के द्वारा किए गए प्रयासों से यह परिणाम निकला की अध्यापकों की अध्यापन शैली में बहुत धनात्मक परिवर्तन आए तथा बच्चों के लिए पढ़ाई का एक बेहतर माहौल बन सका, जिसका परिणाम यह हुआ कि विद्यालय का रिजल्ट कक्षा दसवीं में 7% तथा कक्षा 12वीं में 11% बढ़ गया ।

विद्यालय में छात्राओं कि उपस्थिति भी लगभग 15% से 20% बढ़ गई । पहले लगभग 100 से 150 छात्राएं प्रतिदिन विद्यालय देर से आया करती थी जबकि आज यह संख्या घटकर 8 से 10 रह गई है, वह भी किसी आकस्मिक कारण से होती है । छात्राओं में पर्यावरण के प्रति सजगता आई है जिससे विद्यालय में पेड़ पौधों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गई है और अब विद्यालय का वातावरण सुखद हुआ है। अब टॉफी, चॉकलेट तथा जंक फूड के रैपर विद्यालय में इधर-उधर नहीं बिखरते । अब विद्यालय पहले से बेहतर तथा सुंदर दिखाई देता है ।

विद्यालय के सभी सदस्य भविष्य में विद्यालय को और बेहतर बनाने के लिए तथा विद्यालय को और ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए कार्य कर रहे हैं । इस प्रकार टीम C1, विद्यालय को सर्वोत्तम बनाने के लिए लगातार प्रयासरत हैं ।

Theme: Leading Good Governance in Schools

नमस्कार ,

मैं डॉक्टर सीमा शर्मा प्रधानाचार्य डॉक्टर संपूर्णानंद सर्वोदय कन्या विद्यालय सी ब्लॉक नंबर 1 यमुना विहार दिल्ली-53 । ज़िला उत्तर पूर्व-I का यह विद्यालय जहां कुल 4609 छात्राएं शिक्षा ग्रहण करती हैं जिनमें 2361 अल्पसंख्यक छात्राएं, 325 अनुसूचित जाति की छात्राएं ,4 अनुसूचित जनजाति की छात्राएं, 331 ओबीसी छात्राएं तथा 3939 जनरल छात्राएं शिक्षा ग्रहण करती हैं । विद्यालय में कुल 172 अध्यापक इन

छात्राओं को शिक्षा प्रदान करते हैं। विद्यालय में हर रोज समस्त स्टाफ समय से आता है तथा सभी अपने हस्ताक्षर रजिस्टर में समय से करते हैं तथा सभी की बायोमेट्रिक अटेंडेंस भी रोज समय से होती है ।विद्यालय में कुल 95 कमरे हैं जिनमें यह छात्राएं शिक्षा ग्रहण करती हैं । विद्यालय में अधिकतर छात्राएं समाज के निम्न वर्ग से आती हैं। इन छात्राओं के माता-पिता आर्थिक रूप से अत्यधिक संपन्न नहीं है तथा वे मजदूरी करके अपने परिवार का पालन पोषण करते हैं । पहले यह देखने में आता था कि बहुत अधिक छात्राएं विद्यालय देर से आती थी । प्रधानाचार्य द्वारा तथा ड्यूटी पर उपस्थित अध्यापकों द्वारा अभिभावकों तथा छात्राओं को निरंतर यह समझाया गया कि जीवन में **अनुशासन तथा समयनिष्ठ** होने का क्या महत्व है । लगातार किए गए इन प्रयासों से सुबह देर से विद्यालय आने वाले बच्चों में कमी आई तथा विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति में भी लगभग 14 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई ।

विद्यालय में एक और पहल की गई "**प्रिंसिपल ऑफ़ द डे**" इसमें विद्यालय के हर अध्यापक को एक दिन के लिए विद्यालय के प्रधानाचार्य का कार्यभार सोप दिया जाता है, जिससे हर अध्यापक की ऑफिस के कार्यों के विषय में समझ बनती है तथा उनको प्रशासनिक कार्यों को करने का एक मौका मिलता है, जो उनको जीवन में आगे बढ़ाने की प्रेरणा देता है । इससे छात्रों को भी प्रेरणा मिलती है । इससे प्रधानाचार्य तथा अध्यापको के बीच परस्पर मधुर संबंध भी बनते हैं जिससे विद्यालय का माहौल बहुत धनात्मक ,ऊर्जावान ,खुशनुमा बन जाता है । प्रिंसिपल ऑफ़ द डे बनने के बाद सभी अध्यापक अपना अनुभव साझा करते हैं । बच्चों को असेंबली में रोज नैतिक शिक्षा दी जाती है तथा हर बच्चे को स्टेज पर आकर बोलने का अवसर प्रदान किया जाता है । विद्यालय में हाउस सिस्टम कार्य करता है जिससे यह कार्य और बेहतर तरीके से होता है ।

विद्यालय का एक और कदम "**गमलादान महादान**" इसके अंतर्गत जिस विद्यार्थी या स्टाफ के सदस्य का जन्मदिन होता है वह अपने जन्मदिन पर या किसी भी खुशी के मौके पर विद्यालय को एक पौधा दान करते हैं । इसमें बच्चों को अपने जन्मदिन पर टॉफी या चॉकलेट बांटने की जगह एक पौधा लगाने को कहा जाता है । इससे पर्यावरण को भी लाभ होता है साथ ही विद्यालय में टॉफी चॉकलेट के रैपर इधर-उधर गंदगी नहीं करते । विद्यालय में एक बहुत सुंदर **हर्बल गार्डन** है जिसमें तरह-तरह के पेड़ पौधे लगे हैं । विद्यालय में **जनरल बिपिन रावत वाटिका** भी है । विद्यालय परिवार के सभी सदस्य मिलकर विद्यालय के पर्यावरण को बेहतर बनाने का कार्य करते हैं ।

इसके अलावा विद्यालय में एक और कदम "**Peer Observation**" है जिसके अंतर्गत एक ही विषय के दो अध्यापक एक दूसरे की क्लास को ऑब्जर्व करते हैं तथा फिर कोई भी दो बिंदु जो कक्षा में अच्छे रहे तथा दो बिंदु जिस पर सुधार की आवश्यकता है इस पर चर्चा करते हैं। इससे अध्यापकों की अध्यापन शैली में बहुत धनात्मक परिवर्तन आए तथा बच्चों के लिए पढ़ाई का एक बेहतर माहौल बन सका, जिसका परिणाम यह हुआ कि विद्यालय का रिजल्ट कक्षा दसवीं में 7% तथा कक्षा 12वीं में 11% बढ़ गया ।

विद्यालय की एक पहल **प्लास्टिक फ्री स्कूल** करने के लिए है जिसमें बच्चों को मिड डे मील लेने के लिए प्लास्टिक के टिफिन की जगह स्टील का टिफिन इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित किया जाता है । बच्चों को जंक फूड जैसे चिप्स इत्यादि लाने के लिए मना किया जाता है तथा उन्हें फल तथा रोटी सब्जी लाने के लिए कहा जाता है जिससे वे स्वस्थ रह सके । विद्यालय का एक और कदम **K.Y.O. (Know Your Organisation)** है जिसके अंतर्गत विद्यालय के सभी सदस्यों को एक दूसरे से मिलने का तथा बात करने का एक मंच दिया जाता है जिससे सभी एक दूसरे को जान सके तथा मिलकर एक सशक्त टीम के रूप में बेहतर कार्य कर सकें । इसमें सभी अध्यापक, मिनिस्ट्रियल स्टाफ ,सिक्योरिटी गार्ड सेनेटरी स्टाफ सभी एक दूसरे से मिलते हैं तथा बात करते हैं तथा विद्यालय को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं । इस प्रकार टीम C1, विद्यालय को सर्वोत्तम बनाने के लिए लगातार प्रयासरत हैं ।